E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
हिंदी साहित्य में आदिवासी विमर्श June 2021 Special Issue 02 SJIF Impact- 5.54

40

हिंदी साहित्य में आदिवासियों का योगदान

डॉ.राहुल संदानशिव
ज .जि. म .वि .प्र .सह समाज कला वाणिज्य व विज्ञान | नूतन मराठा महाविद्यालय जलगांव

भारतीय संस्कृति को विश्व में महान संस्कृति का दर्जा प्राप्त है .भारत की इस महान संस्कृति के दर्शन यहां के मूलनिवासी जिन्हे वर्तमानमें आदिवासी के नाम से जाना जाता है,उनके जीवन यापन में देखा जा सकता है "आदिवासी शब्द "आदि "और "वासी "से मिलकर बना है ,जिसका अर्थ मूलनिवासी होता है .आदिवासियों को कई नामों से पहचाना जाता है ,जैसे जनजाति ,आदिवासी ,वनवासी ,आत्मिका,,गिरिजन ,अनुसूचित जनजाति आदि।"१ आदिवासियों को वनवासी या गिरिजन कहना उनके साथ एक छलावा है .क्योंकि वनवासी अर्थात वन में रहनेवाला ,गिरिजन अर्थात पहाड़ों में रहनेवाला .इन नामों से आदिवासियों की पहचान "मूलनिवासी "को ख़त्म करने का षडयंत्र लगता है .आदिवासी ही इस देश के मूलनिवासी या स्वामी है .आज तक जिन्हे अप्रगत,पिछड़ा ,अज्ञानी समझा जाता रहा - वही असल में प्रकृति की गोद में जीवन -यापन कर ,संस्कृति का रक्षक एवं भारत का सुपुत्र है।

वर्तमानके आधुनिक युग में सभ्य समझेजाने वाले समाज में जितनी सारी विसंगतियां ,विकृतियां पायी जाती है ,उनका आदिवासियों के जीवन में अभाव दिखाई देता है,जैसे दहेज प्रथा, महिला -पुरुष भेद ,उच्च -नीच ,दिखावा प्रवृत्ति ,स्वार्थपरकता ,छल - कपट आदि .प्रकृति के साथ तादात्म्य स्थापित कर ये लोग प्रकृति की गोद में जन्म लेते है ,उसी में पलते-बढ़ते है ,और उसी में समां जाते है .सभ्य समाज से दूर रहने के कारण ही उनकी आदर्श संस्कृति अपना अस्तित्व कायम रख पायी है .यही इनकी महानता है ,जिसकी गूंज सारे विश्व में सुनाई देती है .

"हमारे देश के संदर्भ में जब आदिवासियों के अतीत व वर्तमान पर गौर किया जाता है सुदूर में आर्य अनार्य संग्राम श्रृंखला से गुजरते हुए आदिवासियों ने किसी तरह स्वयं के अस्तित्व व अस्मिता की रक्षा करते हुए ,जंगल पर्वतों प्रकृति की शरण में जीते रहने की शैली को अपनाएं रखा।अपनी अनूठी आदिम संस्कृति की अक्षुण्णता को बचाए रखा व मानवता के मूलभूत सरोकारों को तथाकथित मुख्य समाज की सभ्यता से प्रदूषित नहीं होने दिया।" २

प्राचीनकाल से लेकर वर्तमान समय तक सभ्य समाज द्वारा इन्हे जंगल से बेदखल करने की प्रक्रिया हमेशा से चल रही है। कभी मोक्ष की चाह, तो कभी विकास के नाम पर .जब जंगल की रक्षा के लिए ये लोग खड़े होते है ,तो इन्हे कभी राक्षस तो कभी नक्सली कहा जाता है।

"अंग्रेजी सरकार ने भी रेलवे के निर्माण और युद्ध आदि के दौरान अपनी साम्राज्यवादी जरूरतों को पूरा करने के लिए जंगलों का जबरदस्त दोहन किया। देश के कुल जंगल के साठ प्रतिशत क्षेत्र आदिवासी बहुल जिलों के अंतर्गत आता है। नए वनों में भी आदिवसीयों के अधिकारों को तय नहीं किया गया ,इस कारण ये लोग जंगल में अतिक्रमणकारी बन गए .यानि यह माना गया कि,ये लोग जंगल में गैरकानूनी रूप से कब्जा जमा रहे है।"३

सदियों से जंगल और पर्यावरण कि रक्षा करनेवाले आदिवासी अपने ही देश में निर्वासित सा - जीवन जी रहे है .मानो वे इस देश के निवासी ही ना हों। सभ्य समाज के विकास के नाम पर आदिवासियों को सताया जा रहा है .अपने स्वार्थ के कारण मनुष्य मानवता भूल रहा है। ऐसी स्थिति में साहित्यकारों का दायित्व होता है कि वे अपनी कलम के सहारे इसके खिलाप जंग का एलान करें .अनेक साहित्यकार ऐसा कर भी रहे है। एक तरफ वे साहित्यकार है ,जो आदिवासियों के दर्द को अभिवक्ति दे रहे है ,और दूसरी ओर वे साहित्यकार है जो खुद आदिवासी है .महसूस करने और खुद भोगने में अंतर होता है स्थिति कैसी भी हो लेकिन दोनों का उद्देश्य एक ही है। सदियों से पीड़ित ,प्रताड़ित आदिवासी समाज कि ओर अब तक उपेक्षा कि दृष्टी से देखा गया ,किन्तु अब उनकी वाणी को बुलंद करने का काम साहित्य कर रहा है। ऐसा नहीं की इससे पहले हिंदी साहित्य में आदिवासियों की उपस्थिति नहीं है। रामायण से लेकर वर्तमान युग की साहित्य की हर विधा में आदवासी जीवन का चित्रण हुआ है .

रामचरितमानस के रचियता तुलसीदस जी ने अपने ग्रंथ में आदिवासियों के जीवन पर प्रकाश डाला है। रामचरितमानस में

AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
E- ISSN 2582-5429
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
हिंदी साहित्य में आदिवासी विमर्श June 2021 Special Issue 02 SJIF Impact- 5.54

विशेषता रही है।यह विशेषता रामचरितमानस में देखि जा सकती है .जब, श्री राम सीता लक्ष्मण समवेत वनागमन कर रहे थे ,चित्रकूट पर्वत की ओर जाते समय किरात और कोल नामक आदिवासी पात्र उनका स्वागत करते है । सभी प्रकार का सहयोग करने का आश्वासन देते हुए उनकी पूजा अर्चना करते है ।"यह सुधि कोल किरातन्ह पाई । हरषे जनु नव निधि घर आई ॥ / कंद मूल फल भरि भरि दोना । चले रंक जनु लूटन सोना ॥"४

इसी प्रकार मानस के अरण्य कांड में शबरी नामक आदिवासी स्त्री का उल्लेख है । जिसका उद्धार श्री राम ने किया था। महाभारत में भी आदिवासी पात्र एकलव्य का उल्लेख मिलता है .गुरु द्रोणाचार्य द्वारा अपना सर्वस्व [अंगूठा] मांगने पर खुशी- खुशी अंगूठे का दान करनेवाला एकलव्य अपने वचन पूर्ति के लिए विश्व का महान धनुर्धारी बनने की अभिलाषा को तिलांजलि देता है। प्रस्तुत प्रसंग से "प्राण जाए पर वचन न जाए " की उक्ति सही अर्थ में आदिवासियों को ही शोभा दे है ।

अंग्रेजों के शासन काल में जहाँ सभ्य समाज अंग्रेजों का विरोध करने के साथ अंग्रेजो द्वारा दी गई सुविधाओं का लाभ उठा रहा था .उस वक्त भी आदिवासी अपने अधिकारों की रक्षा हेतु अंग्रेजों से लड़ रहा था . किन्तु अंग्रेज पूरी तरह से उसे परास्त नहीं कर पाये। "आदिवासियों ने तो अंग्रेजों के ज़माने से ही अपने को सामाजिक ,आर्थिक ,तथा राजनीतिक शोषण से मुक्त करने तथा स्वाभिमान के साथ जीवन-यापन करने के लिए अनेक आंदोलन चलाए थे .उसी दौर में जब यहाँ के राजा ,रियासतदार ,नवाब ,जमींदार गुलामी में अपने स्वाभिमान को ताक पर रख सत्ता का सुख भोग रहे थे तब बिरसा मुंडा अपने जुझारू साथियों के साथ ब्रिटिश हुक्मरानों से आजादी की जंग लड़ रहा था।"५

जियालाल आर्य ने अपने खंडकाव्य "जय बिरसा "में आदिवासी समाज का चित्रण किया है। प्रस्तुत खंडकाव्य में नायक के रूप में बिरसा मुंडा है। इतिहास से बेदखल बिरसा मुंडा के जीवन संघर्ष की कहानी प्रस्तुत कर आर्य जी ने आदिवासी जीवन के पक्षधर होने का प्रमाण दिया है। आधुनिक युग परिवर्तनवादी युग कहलाता है। आधुनिक शिक्षा एवं संसाधनों के कारण आदिवासियों को अपनी अस्मिता की पहचान हुई । फल स्वरुप आदिवासियों द्वारा अन्याय नष्ट करने हेतु विविध आंदोलन होने लगेआधुनिक हिंदी साहित्यकारों की आदिवासियों के जीवन की ओर देखने की दृष्टी बदल गई। आदिवासियों की पीड़ा को अधिक तीव्रता के साथ हिंदी साहित्य में अभिव्यक्त किया जाने लगा है । आदिवासी जीवन पर आधारित पद्य साहित्य के साथ प्रचुर मात्रा में गद्य साहित्य भी लिखा जा रहा है.जिसमे आदिवासियों के संघर्षमय जीवन पर प्रकाश डाला गया है। हिंदी गद्य साहित्य में कहानी,नाटक, एकांकी के साथ ही उपन्यास विधा में भी आदिवासी स्वर मुखरित हुआ है।

१९०४ में प्रकाशित मन्नन द्विवेदी का 'रामलाल 'शीर्षक उपन्यास आदिवासी जीवन पर आधारित एक सफल उपन्यास है .जिसमें सभी वर्गों शहरी ,ग्रामीण ,पुलिस ,पटवारी ,भगत ,पोस्टमैन,साहूकार,अदालत , आदि का व्यंग्यपूर्ण चित्रण कर आदिवासी पात्र रामलाल के जीवन संघर्ष को अभिव्यक्त किया गया है .

योगेंद्रनाथ सिन्हा द्वारा लिखित 'वन लक्ष्मी 'उपन्यास आदिवासियों के धर्मान्तरण को केंद्र में रखकर लिखा गया उपन्यास है ,जिसमे बुदनी नामक आदिवासी कन्या का एक ईसाई धर्म के यक्ति के प्यार में फंस जाने, और उससे उसके जीवन में आए संघर्ष की कथा है .

१९७३ में प्रकाशित हिमांशु जोशी द्वारा लिखित 'अरण्य 'उपन्यास में कूमांचल के आदिवासियों का चित्रण है। इसी प्रकार "पिंजरे में पन्ना "मणि मधुकर द्वारा लिखित उपन्यास है जो राजस्थान के गाड़िया लुहार आदिवासी जाति के जीवन को केंद्र में रखकर लिखा गया है।

' जंगल के आस -पास ' १९८२ में प्रकाशित राकेश वत्स का उपन्यास है जो दमकड़ी के आदिवासियों के जीवन को केंद में रखकर लिखा गया आंचलिक उपन्यास है ,जिसमें सोन नदी के किनारे फैले जंगल और पहाड़ियों में बसे दमकड़ी अंचल के पिछड़े और शोषित आदिवासियों का आधुनिक सभ्यता से अलग जीवन का चित्रण है।

१९८४ में प्रकाशित 'महर ठाकुरों का गाँव' अल्मोड़ा जिले की गहरी घाटियों में बसे आदिवासी महर ठाकुरों के जीवन को प्रदर्शित करने वाला बटरोही का आदिवासी जीवन केंद्रित उपन्यास है।

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
हिंदी साहित्य में आदिवासी विमर्श June 2021 Special Issue 02 SJIF Impact- 5.54

सुरेशचंद्र श्रीवास्तव का १९८६ में प्रकाशित 'वनतरी' उपन्यास में बिहार राज्य के होयहांत प्रखंड की डुमरी अंचल है की कथा है। डुमरी अंचल में भुइया ,तुरी ,महरा,महतो आदि आदिवासी बसते है। किन्तु प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने केवल परहिया आदिवासी जीवन को केंद्र में रखा है।

श्री प्रकाश मिश्र द्वारा लिखित 'जहाँ बाँस फूलते है' [१९७७] उपन्यास में आदिवासी लुशेईयों की समस्यायों को उनके जीवन संघर्ष को केंद्र में रखा गया है। भगवानदास मोरवाल का १९९९ में प्रकाशित 'काला पहाड़ ' देश में बढ़ती हुई साम्प्रदायिकता पर गहरी संवेदनाओं को व्यक्त करनेवाला आदिवासी जीवन पर आधारित उपन्यास है। 'जंगल जहाँ शुरू होता है ' यह संजीव द्वारा लिखित उपन्यास आदिवासी धारु जाति और डाकुओं एवं राजनेताओं के आपसी लड़ाई को प्रदर्शित करनेवाला उपन्यास है .इस उपन्यास के माध्यम से लेखक संकेत करते है कि जंगल हर मनुष्य में पनपते रहता है जिससे हमारा अक्सर सामना होते रहता है। मैत्रेयि पुष्पा द्वारा लिखित 'अल्मा कबूतरी 'कबूतरा आदिवासी जीवन को केंद्र में रखकर लिखा गया उपन्यास है। उपन्यास की कथा भूमि बुन्देल खंड की कबूतरा नामक आदिवासी जाति है जो अपना संबध जौहर के लिए किवदंती बन चुकी रानी पद्मिनी से जोड़ते है ,तथा पौराणिक युग तक छलांग लगाकर महादेव शिव के समाज में शामिल हो जाती है .

वर्तमान समय में विकास के नाम पर आदिवासी समुदाय को उसकी मूलभूत आवश्यकताओं जल ,जंगल ,जमीन से बेदखल किया जा रहा है .ऐसे में संकट केवल उनके अस्तित्व पर ही नहीं उनकी संस्कृति पर भी है .इसी बात को केंद्र में रखकर आदिवासी समुदाय पर आधारित दो उपन्यास है जिनके शीर्षक है 'ग्लोबल गावं के देवता 'तथा 'गायब होता देश 'दोनों उपन्यास के लेखक कथाकार रणेन्द्र है। इस प्रकार हिंदी साहित्य में आदिवासी जीवन पर आधारित जो उपन्यास अबतक लिखे गए ,उनमे प्रारंभिक उपन्यासों में आदिवासी समुदाय के बाह्य स्वरुप को कथा का आधार बनाया जाता था ,किंतु अब उसमें विस्तार हुआ है .अब जो उपन्यास लिखे जा रहे है उनमें आदिवासियों के शोषण ,दमन तथा मुख्यधारा के साथ जुड़ने ,उसके अस्तित्व बोध के खतरे को सामने रखकर लिखा जा रहा है .

कथा साहित्य के साथ ही आधुनिक हिंदी कविता में भी आदिवासी जीवन को अभिव्यक्ति प्रदान की गई है .निर्मला पुतुल ,अनुज ,लगुन,महादेव टोप्पे,हरिराम मीणा ,रमणिका गुप्ता ,रामदया मुंडा ,ग्रेस कुजूर ,कुमारेन्द्र पारसनाथ ,एकांत श्रीवास्तव ,विनोद कुमार शुक्ल ,ज्ञानेन्द्रपति ,चंद्रकांत देवताले ,ऋतुराज ,विनोद दास ,सुदीप बैनर्जी ,सुरेश तनवर आदि कवियों ने अपनी कविताओं के माध्यम से आदिवासियों की पीड़ा को वाणी प्रदान की है.

निर्मला पुतुल मुलत: आदिवासी कवयित्री है .इन्होने संथाली भाषा में काव्य-सृजन किया है .निर्मला जी का प्रसिद्ध काव्य संग्रह है 'नगाड़े की तरह बजते शब्द 'मूल संथाली भाषा में रचित इस ग्रन्थ का हिंदी अनुवाद हुआ है .इनकी कविता एक ओर सभ्य समाज द्वारा पीड़ित आदिवासी का पक्ष लेती है तो दूसरी तरफ अपने समाज में घुसपैठ करने वाली पुरुष प्रधान संस्कृति के खिलाफ आवाज बुलंद करती है। आदिवासी स्त्री की पीड़ा को अभिव्यक्त करती हुई वे कहती है -" क्या तुम जानते हो ,/एक स्त्री के समस्त रिश्ते का व्याकरण ? /बना सकते हो तुम /एक स्त्री को स्त्री -दृष्टी से देखते /उसके स्त्रीत्व की परिभाषा /अगर नहीं ! / तो फिर जानते क्या हो तुम | /रसोई और बिस्तर के गणित से परे एक स्त्री के बारे में ? ७

कवि सुदेश तनवर अपनी कविता ' सांस्कृतिक राष्ट्रवाद ' में भूमंडलीकरण के कारण उत्पन्न विदारक स्थिति का चित्रण करते हुए कहते है -

निजीकरण /उदारीकरण /भूमण्डलीकरण की आड़ में / तुमने - छिछोरेपन की /सारी हदे तोड़ दी है / मै- तुम्हारे पुरखों के दिए गए / जातीय अपमान की आग में / झूलस रहा हूँ / भूख से / बिलबिला रहा हूँ / महान देश भक्त / राष्ट्र के शुभचिंतक। ८

राज सत्ता द्वारा आदिवासियों को जंगल से निकालने और उनके अस्तित्व को मिटने की कोशिश को बेनकाब करते हुए विनोद कुमार शुक्ल कहते है की असल में जंगल उन्ही का है जो जंगल में निवास करते है- "जो प्रकृति का सबसे निकट है / जंगल उनका है / आदिवासी जंगल में सबसे निकट है / इसलिए जंगल उन्ही का है / अब उनके बेदखल होने का समय है / यह वही समय है / जब आकाश से / एक तारा बेदखल होगा /एक पेड़ से / पक्षी बेदखल होगा / आकाश से चांदनी / बेदखल होगी - / जंगल से आदिवासी / बेदखल होंगे।"९

AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
E- ISSN 2582-5429
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
हिंदी साहित्य में आदिवासी विमर्श June 2021 Special Issue 02 SJIF Impact- 5.54

एक तरफ जंगली जानवरों को मारनेपर सरकार प्रतिबन्ध लगाती है ,तो दूसरी ओर जंगल में रहनेवाले आदिवासियों को उनकी संस्कृति उनका अस्तित्व को ही समाप्त करने पर तुली हुई है। बहुराष्ट्रिय कंपनियों के लिए विकास की आड़ में जंगल काटे जा रहे है .आदिवासियों के उपजीविका के साधन ख़त्म किए जा रहे है ,जंगलो में बनी सड़के विकास के द्योतक नहीं ,आदिवासियों के लिए उनकी आज़ादी ख़त्म करने का षड़यंत्र है .कवि ज्ञानेन्द्रपति कहते है –

एक तरफ जंगली जानवरों को मारनेपर सरकार प्रतिबन्ध लगाती है ,तो दूसरी ओर जंगल में रहनेवाले आदिवासियों को उनकी संस्कृति उनका अस्तित्व को ही समाप्त करने पर तुली हुई है। बहुराष्ट्रिय कंपनियों के लिए विकास की आड़ में जंगल काटे जा रहे है। आदिवासियों के उपजीविका के साधन ख़त्म किए जा रहे है ,जंगलो में बनी सड़के विकास के द्योतक नहीं ,आदिवासियों के लिए उनकी आज़ादी ख़त्म करने का षड़यंत्र है। कवि ज्ञानेन्द्रपति कहते है -

" इस आदिवासी गांव के आँगन से गुजरी हुई यह सड़क /
अत्याचारियों के गुजरने का रास्ता है .
यह इनके पैरों से नहीं बना / यह इनके पैरों के लिए नहीं बना
बड़े-बड़े रोड रोलर आए थे ,लुटेरे वाहनों के आने से पहले
धरती कंपाते धीरे -धीरे चलते हुए विशालकाय रोड रोलर "१०

वर्तमान के आदिवासी साहित्य में आदिवासियों की समस्याओं को लेकर काफी मात्रा में साहित्य सृजन हो रहा है। आदिवासी अपने जल -जंगल, जमीन की लड़ाई लड़ रहा है। किंतु उसे औद्योगिक विकास में बाधक मानकर जंगल से खदेड़ा जा रहा है।

निष्कर्ष :-

इस प्रकार हम देखते है प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक साहित्य की हर विधा में आदिवासियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है। रामचरितमानस के कोल, किरात तथा शबरी हो या महाभारत का एकलव्य अपने को सताएं जाने पर भी परहित में बाधक नहीं बनते। अतिथि देवों भव: ,प्राण जाए पर वचन न जाए जैसी उक्तियाँ इन्ही आदिवासी पत्रों को शोभा देती है। अंग्रेजों के ज़माने में जहां एक ओर सभ्य समाज अंग्रेजों के साथ मिलकर सुविधाओं का लाभ उठा रहा था उसी समय बिरसा मुंडा जैसा आदिवासी अंग्रेजों को खुले आम चुनौती देता नजर आता है। जो आदिवासियों की स्वतंत्रता ओर स्वाभिमान का प्रतिक है।

वर्तमान युग में शिक्षा के प्रभाव कारण प्राचीन काल में हुए षडयंत्रों को आदिवासी समझ रहा है । प्राचीन काल से बोध लेकर आधुनिक युग में हो रहे अन्याय ,अत्याचार के खिलाफ उसने मोर्चा खोला,कई आंदोलन किए ,इन्ही आंदलनों से हिंदी साहित्य को नई कथा भूमि मिली जिससे आदिवासी साहित्य के केंद्र में आया .पहले वह गौण पात्र था ,किंतु अब वह मुख्य पात्र की भूमिका निभा रहा है। अब दर्द भी उसीका ओर कलम भी उसी की है अब उसे किसी पर निर्भर रहने की आवश्यकता नहीं । कोई उसका साथ दे या न दे वह निकल पड़ा है अपनी लड़ाई लड़ने कलम रूपी तलवार के साथ और समाज को सचेत करते हुए हिंदी साहित्य की समृद्धि में योगदान दे रहा है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि :-

1. आदिवासी साहित्य विविध आयाम -डॉ रमेश कुरे [संपादक]विकास प्रकाशन कानपूर २०१३
2. अरावली उद्घोष आदिवासी संस्मरण ,स .बी .पी.वर्मा 'पथिक 'जून -२०१० ,अंक ८८ पृ .८८
3. जनसत्ता ,सम्पादकीय 'जंगल के दावेदार 'कमल नयन चौबे ,२० मई२०१०
4. श्रीरामचरितमानस -तुलसीदास गीता प्रेस गोरखपुर दोहा १३४ पृ ४४३
5. अपेक्षा ,जनवरी /मार्च २००४ ,दिल्ली ,संपा.तेजसिंह ,हिंदुत्व और आदिवासी -मोहनदास नैमिशराय ,पृ ६५
6. सविता नरहरी राजभोज ,मानवीय कल्याण की वेदना ,आदिवासी कविता .लेख
7. निर्मला पुतुल ,नगाड़े की तरह बजते शब्द ,भारतीय ज्ञानपीठ ,दिल्ली २००४ पृ -८
8. विमल थोरात, सूरज बड़त्या [सं] भारतीय दलित साहित्य का विद्रोही स्वर ,रावत पब्लिकेशन ,जयपुर - २००८पृ ६६
9. विनोद कुमार शुक्ल ,वागर्थ ,अंक १८५ सितम्बर २०१० आमुख
10. ज्ञानेंद्रपति ,संशयात्मा ,राधाकृष्ण दिल्ली ,२००४ पृ 20